शहरी आंगनवाड़ी केन्द्रों का 'सूरत' मॉडल

"आंगनवाड़ी केंद्र में नामांकन के अनुरूप ८०% से ज्यादा बच्चों की उपस्थिति और ५ से ६ घंटे केंद्र पर ठहराव। केंद्र कार्यकर्त्ता और सहायिका दोनों पूरे समय बच्चों के साथ सक्रिय और आयु अनुसार अलग अलग समूह बनाकर अलग अलग बाल विकास पर गतिविधियों को आयोजित करती हुई। सुबह गुड़-चना के साथ सूखा नाश्ता और दोपहर में हर दिन के मेनू के अनुसार गर्म पोषाहार। बच्चों के लिए ढेर सारी खेल सामग्री। सजे धजे "स्वयं के" केंद्र भवन। बच्चों की आयु अनुसार वृद्धि जांच के सभी साधन मौजूद। स्टाफ और अधिकांश बच्चे यूनिफार्म में।"

सामुदायिक विकास क्षेत्र में जो लोग समेकित बाल विकास या यूँ कहें आंगनवाड़ी केन्द्रों के साथ काम करते हैं, उनके लिए ऐसा आंगनवाड़ी केंद्र "मॉडल आंगनवाड़ी केंद्र" कहलाता है। देश भर में अधिकांश शहरी क्षेत्रों में ऐसा "मॉडल" आंगनवाड़ी केंद्र एक सपना ही है; किन्तु इस सपने को धरती पर उतार कर दिखाया है सूरत महानगर पालिका और समेकित बाल विकास सेवाएं (आईसीडीएस) ने।

सूरत के दक्षिण ज़ोन के एक केंद्र में यूनिफार्म में बैठे बच्चे

ICLEI साउथ एशिया सूरत महानगर पालिका के साथ उनके सहयोग से 'नेट जीरो क्लाइमेट रिसिलियेंट सिटी एक्शन प्लान' (CRCAP) बना रही है। इसी के साथ जलवायु में हो रहे बदलावों से समाज के निम्न, मध्यम, वंचित एवं उपेक्षित वर्गों पर पड़ वित्तीय और गैर वित्तीय प्रभावों के आकलन के लिए 'लोस एंड डैमेज प्रोजेक्ट' संचालित कर रही है। इसी के दौरान ICLEI साउथ एशिया टीम ने सूरत महानगर पालिका क्षेत्र के आंगनवाड़ी केन्द्रों को करीब से जानने की कोशिश की।

अगर आंकड़ों पर चलें तो सूरत शहरी क्षेत्र में कुल १०९५ आंगनवाड़ी केंद्र हैं। इन केन्द्रों को महानगर पालिका ने आईसीडीएस के सहयोग से कुल ०९ ज़ोन में विभक्त किया है। प्रत्येक ज़ोन में पुनः ३ से ४ मंडल बनाकर प्रत्येक मंडल में ३० से ४० तक आंगनवाड़ी केंद्र बांटे गए हैं। हर एक मंडल पर एक महिला पर्यवेक्षक हैं जो केंद्र कार्यकर्त्ता को बच्चों की शाला पूर्व शिक्षा, रिकॉर्ड संधारण और अन्य सामुदायिक आधारित गतिविधियाँ और विशेष दिवस आयोजन में सहयोग करती हैं। माह में प्रत्येक आखिरी सप्ताह में प्रत्येक मंडल की मासिक समीक्षा और आयोजना बैठक होती है। सूरत में मौजूद कुल १०९५ आंगनवाड़ी केन्द्रों में से ८५% से अधिक केंद्र स्थानीय महानगर पालिका द्वारा बनाये गए भवन में संचालित होती है। यहाँ बच्चों के लिए गतिविधि कक्ष, रसोई, भंडार गृह (स्टोर) आदि बनाये गए हैं। शेष १५% केंद्र, जहाँ

भवन बनाने के लिए स्थान उपलब्ध नहीं है, वहां आईसीडीएस एक भवन किराए के लिए अधिकतम मासिक ६ हजार तक खर्च करता है।

सभी केन्द्रों पर यूनिसेफ के सहयोग से आयु वर्ग अनुसार बच्चों के लिए गतिविधि पुस्तिकाएं गुजराती, हिंदी और मराठी भाषाओँ में तैयार की गयी हैं। बच्चे इनमे रंगों, आकारों, संख्याओं, अनुपात, पशु-पक्षियों, फल- सब्जियों, वाहन, दैनिक जीवन के उपयोगी साधनों-संसाधनों की पहचान कर सकते हैं। इनमे रंग भर सकते हैं- चित्र बना सकते हैं।

सबसे पहले मुलाकात हुई रान्धेर उपनगर के गाँधी वसाहट, गोलवाड़ आंगनवाड़ी केंद्र की कार्यकर्त्ता जीनल बेन पटेल से। जब हम वहां पहुंचे तो तकरीबन २८ बच्चे केंद्र में मौजूद थे। जीनल बेन ४ साल से बड़े बच्चों के लिए एक रचनात्मक गतिविधि आयोजित कर रही थी जबकि केंद्र सहायिका भावना बेन ४ साल से छोटे १४-१५ बच्चों के साथ एक गुजराती कविता पर हाव भाव के साथ गतिविधि आयोजित कर रही थी। बड़ा ही मनोरम दृश्य था। जीनल बेन ने बच्चों को एक काम सौंपा और हमसे रूबरू हुई। उन्होंने बताया कि उनके केंद्र में ३ साल से बड़े कुल ३० बच्चे नामांकित हैं, जिनमें से २८ आज मौजूद हैं। *(यहाँ यह गौर करने वाली बात है कि हम केंद्र पर बिना पूर्व सूचना के पहुंचे थे)*

जीनल बेन ने हमें कुल ६ घंटे केंद्र संचालन का पूरा टाइम टेबल समझाया। इसमें बच्चों के साथ अलग अलग बाल विकास सम्बन्धी गतिविधियाँ, आउटडोर खेल, गर्म पोषाहार का समय और उसके बाद 'हेड डाउन' (३० मिनट के लिए बच्चों को सुलाना) आदि शामिल था। हम बात कर ही रहे थे कि बच्चों की तरफ से सन्देश आया कि उन्होंने दिया गया टास्क पूरा कर लिया है। जीनल बेन ने हमसे माफ़ी मांगी और बच्चों के साथ मसरूफ हो गयीं। बच्चों के साथ उनका स्नेह और लगाव, तन्मयता और काम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण मन मोहने वाला था।

इंदिरा नगर वसाहट आंगनवाडी केंद्र पर एक क्रम से खुले चप्पल और जूते हमें अनुशासन का एक नया पाठ सीखा रहे थे.

उनसे विदा ले हम दक्षिण ज़ोन के उधना उपनगरीय क्षेत्र में पहुंचे। यहाँ इंदिरानगर वसाहट के केंद्र पर हमें कार्यकर्त्ता नयना बेन और आशा सहयोगिनी उमा ठाकोर मिलीं। दोपहर के १२ बजने वाले थे और इस केंद्र पर भी हमें ३० से ज्यादा बच्चे मिले जो वहां के कुल नामांकन का ९०% था। हमारी जिज्ञासा चरम पर थी। यहाँ केंद्र की दीवारों पर बने चित्रों के माध्यम से गुजराती भाषा में खेल खेल में सीखो गतिविधि आयोजित हो रही थी। नयना बेन के केंद्र का संचालन उमा जी को सौंपा और हमसे मुखातिब हुई। पिछले १५ से अधिक सालों से वे आंगनवाड़ी केंद्र संभाल रही है। उनके क्षेत्र में ज्यादातर उन परिवारों के बच्चे आते हैं, जिनके परिवार टेक्सटाइल कम्पनियों में मजदूरी करने जाते हैं। नयना बेन ने बताया कि केंद्र संचालन का समय ६ घंटे होने से बड़ा फायदा ये हैं कि परिवार के सदस्य आराम से काम पर जा सकते हैं। इस से बच्चों की केंद्र पर उपस्थिति और ठहराव; दोनों बढ़ते हैं। भवन के मालिकाना हक के बारे में उन्होंने बताया कि चूँकि इस क्षेत्र में बच्चों की संख्या ५० से अधिक है, इसलिए यहाँ २ केंद्र संचालित होते हैं। सूरत महानगर पालिका ने यहाँ २ मंजिला भवन बनाया। एक केंद्र नीचे भूतल और एक केंद्र उपरी तल पर चलता हैं। दोनों ही केन्द्रों पर आकर्षक बाल-सुलभ चित्रकारी और "बाला" (बिल्डिंग एज लर्निंग एड) पेंटिंग बनी हुई थी। यहाँ केंद्र के बाहर बच्चों ने जिस तरह से अपने जूते एक पंक्ति में खोल रखे थे, वह अनुशासन का नया पाथ हमें सिखा रहा था। एक और बात, हम जिन जिन केन्द्रों पर गए, हमें हमेशा पूरा स्टाफ निर्धारित यूनिफार्म में मिला।

नयना बेन ने यह भी बताया कि मौसम की चरम स्थितियों में वे केंद्र समय को अपने अनुसार बदल देती हैं, ताकि बच्चों को कम से कम परेशानी हो। इस स्थिति में बच्चों के बेहतर लालपन पालन के लिए उन्हें प्रशिक्षण भी मिला है।

गाँधी वसाहट गोलवाड़ केंद्र की सहायिका बच्चों के साथ गतिविधि करते हुए

हमारी जिज्ञासा चरम पर थी। अगले दिन हमारा पड़ाव सूरत शहर में खाड़ी (क्रीक) क्षेत्र में बसे लिम्बायत उपनगर की ओर था। दक्षिण पूर्वी ज़ोन में इस उपनगर के फुलवाड़ी आंगनवाड़ी केंद्र और हलपति नगर डूम्भाल केंद्र पहुंचे। यह इलाका मुस्लिम बहुल है और अधिकांश लोग टेम्पो चलाने, ज़री का काम करने और पास की सब्जी मंडी में हमाली का काम करने जाते हैं। मंगलवार का दिन था और यहाँ किशोरियों का एक समूह बैठा था। केंद्र कार्यकर्त्ता लीला बेन पटेल ने बताया कि बच्चे आज सहायिका के साथ पास के पार्क में घूमने और 'आउटडोर गतिविधियों' में व्यस्त हैं; आप चाहें तो वहां जाकर मिल सकते हैं। केंद्र में प्रत्येक आखिरी मंगलवार को किशोरी बैठक आयोजित होती है, जिस में किशोरियों के जीवन कौशल और व्यक्तिगत साफ़ सफाई पर चर्चा होती है। इस दौरान किशोरियों को माहवारी स्वच्छता प्रबंधन के लिए सेनेटरी पैड्स भी वितरित किये जाते हैं। चूँकि यह मेरा प्रिय विषय था तो मैंने उनसे किशोरियों से बातचीत करने की अनुमति मांगी। स्थानीय नर्सिंग कर्मी परवीन बानू ने मुझे इसकी अनुमति सहर्ष दे दी और हमने किशोरियों के साथ किशोरावस्था में बदलाव और जेंडर आधारित मुद्दों पर चर्चा की। किशोरियों की समझ देखने लायक थी और उन्हें विषय की अच्छी पकड़ थी। गौर करने वाली बात थी कि अधिकांश किशोरियां दसवीं या बारहवी के बाद पढ़ाई छोड़ चुकी थी।

लीला बेन पटेल ने हमें बताया कि प्रत्येक महीने के दूसरे मंगलवार को वे गर्भवती- धात्री महिलाओं के साथ "मातृत्व स्वास्थ्य दिवस" का आयोजन करती हैं जबकि चौथे मंगलवार को किशोरी बैठक। इस दिन बच्चे केंद्र सहायिका के साथ पास के पार्क में खेलने जाते हैं। इस से उनका प्रकृति के साथ लगाव होता है वहीँ शारीरिक गतिविधियों के लिए भी उन्हें बेहतर अवसर मिलता है। मैंने लीला बेन को उनकी समझ और ऊर्जा के लिए बधाई दी।

सूरत के लिम्बायत क्षेत्र में किशोरी बैठक

अब हमारी बारी थी किसी एक वरिष्ठ साथी से मिलने की। फुलवाड़ी केंद्र पर हम स्थानीय महिला पर्यवेक्षक रजनी "दीदी" से मिले। उन्होंने बताया कि अगर सूरत शहर के केंद्र इतने अच्छे से संचालित हो रहे हैं तो इसका बड़ा श्रेय सूरत महानगर पालिका और आईसीडीएस दोनों को जाता है। आईसीडीएस ने मांग रखी और महानगर पालिका ने केन्द्रों के लिए "नंदघर योजना" के तहत नए भवन बना दिए। जब स्थायी ठिकाना मिला तो बच्चों के नामांकन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। इसके पश्चात प्रत्येक साल केंद्र के स्टाफ के लिए

शाला पूर्व शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण पर नियमित प्रशिक्षण आयोजित किये जाने लगे। कुछ कार्यकर्त्ता जो ज्यादा एक्टिव थे, वे स्वयं प्रशिक्षक बन गए। इस से आपस में केंद्र स्टाफ को सहयोग मिला और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना ने जन्म लिया। साथ ही साथ में सभी महिला पर्यवेक्षकों ने भी निगरानी की बजाय "सपोर्टिव मोनिटरिंग" (सहयोगात्मक निगरानी) पर बल दिया। इस से आपसी समन्वय और विश्वास बढ़ा। विभाग ने नियमित तौर पर केंद्र स्टाफ और बच्चों के लिए यूनिफार्म के लिए बजट जारी किया। रिकॉर्ड संधारण को डिजिटल कर दिया।

जिन स्थानों पर भवन निर्माण संभव नहीं था, वहां किराया ०१ हजार से बढ़ाकर ०६ हजार तक कर दिया, ताकि एक अच्छा भवन किराये पर लिया जा सके। प्रत्येक क्षेत्र में अच्छी उपलब्धियों वाले केंद्र स्टाफ को हर साल "यशोदा माता पुरस्कार" प्रदान किया जाता है। स्थानीय सामाजिक संस्थाओं और अन्य दानदाताओं के माध्यम से केंद्र के नियमित रंग रोगन और सामग्री के लिए सहयोग लिया जाता है। उन्होंने बताया कि अब तक ५०० से ज्यादा केन्द्रों को दानदाताओं का सहयोग मिल चुका है।

उल्लेखनीय है कि उत्तर और मध्य भारत के अधिकांश राज्यों में केंद्र संचालन का समय ०४ घंटे तक निर्धारित किया गया है। ऐसे में बच्चों की नियमित संख्या को बनाये रखना एक बड़ी चुनौती है। कई राज्यों में समन्वय के अभाव में शहरी क्षेत्रों में अधिकांश आंगनवाड़ी केंद्र किराये के भवनों में चल रहे हैं, जिनका अधिकतम किराया २५०० तक निर्धारित किया गया है। ऐसे में बच्चों के लिए बड़ा स्थान मिलना मुश्किल हो जाता है। ऐसे में सूरत शहर का यह मॉडल अन्य शहरों और राज्यों के लिए एक मिसाल हैं, जहाँ आपसी सहयोग, विश्वास और समन्वय से नौनिहालों के आरंभिक जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में मज़बूत कदम उठाये जा सकते हैं।

आलेख: ओम प्रकाश, (प्रारम्भिक बाल विकास विशेषज्ञ), ICLEI साउथ एशिया, उदयपुर

सहयोग: रितु शर्मा, (सीनियर प्रोजेक्ट ऑफिसर), ICLEI साउथ एशिया, सूरत